ग़ज़लें

डॉ. अनिल शर्मा 'सरल', हिंदी प्रवक्ता
बी.एस.एम.इण्टर कॉलेज ,रूड़की

अलफाज नर्म हो गए लहजे बदल गए ,
लगता है दुश्मनों के इरादे बदल गए ।

कुछ लोग हैं जो झेल रहे हैं मुसीबतें ,
कुछ लोग हैं जो वक्त से पहले बदल गए ।

खुद हरकतों पे बेटे की हैरान बाप है ,
लगता है अस्पताल में बच्चे बदल गए ।

सुन्दर सा लिखा गेट पे 'कुत्तों' से सावधान ,
लगता है स्वागतम् के तरीके बदल गए ।

गैरों का शिकवा करना तो बेकार है 'सरल' ,
कैसा ये वक्त आया के अपने बदल गए ।

* *

एक दीप अँधेरे में जलाकर तो देखिए ,
नफरत की जमी बर्फ गलाकर तो देखिए ।

आ जायेगा संसार सिमटकर ये बाहों में ,
गैरों को कभी अपना बनाकर तो देखिए ।

तूफाँ में भी ये कश्तियाँ चलती ही जाएंगी,
पतवार हौसले से चलाकर तो देखिए ।

सौगात चाहते हो अगर जग में प्रेम की ,
आँखों में अपनी प्यार सजाकर तो देखिए ।

भगवान मिलने आयेंगे खुद तुमसे अ ' सरल'
भक्ति के पुष्प दिल में खिलाकर तो देखिए ।